बालयोगी सभागार में कोटा-बूँदी संसदीय क्षेत्र के किसानों को माननीय अध्यक्ष का संबोधन

मेरे कोटा-बूँदी संसदीय क्षेत्र के सब किसान भाइयो, आप सब का संसद भवन में स्वागत है, अभिनंदन है।

आप दूरदराज के गाँवों से आज पीएम सम्मान निधि के बारे में हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी का संबोधन सुनने आए हैं। उसके साथ-साथ आज आपने देखा कि उस किसान सम्मेलन में किस तरीके से हम नई तकनीकी, नई स्टार्टअप और नई कार्ययोजना के माध्यम से काम कर रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना है कि देश के किसानों की आय दोगुनी हो। उसके लिए आज उन्होंने 'प्रधानमंत्री समृद्धि किसान योजना' भी शुरू की है। मैं भी कई दिनों से आप लोगों से चर्चा कर रहा हूँ कि कोटा-बूँदी संसदीय क्षेत्र के किसान आधुनिक खेती और नई तकनीकी के माध्यम से खेती करें। वे लगातार नए-नए अनुसंधान करते रहते हैं। देश में कोटा-बूँदी एक ऐसा इलाका है, जहाँ पर काफी इलाके के अंदर हमारी चंबल नदी से सिंचाई होती है। आने वाले समय में जो इलाका बचा हुआ है, वहाँ परवन और कालीसिंध नदियों से भी वह इलाका सिंचित होगा।

आज हम कह सकते हैं कि आने वाले समय के अंदर पूरे इलाके में जो सतही जल है, जो नदियाँ हैं, हमारी नई और पुरानी नदियाँ हैं, उनसे पूरा इलाका सिंचित हो जाएगा। हमारे यहाँ की जमीन सबसे उर्वर जमीन है। हमारे यहाँ पर्याप्त पानी है। आने वाले समय में जिस इलाके में पानी नहीं है, वहाँ पर पर्याप्त पानी भी पहुँच जाएगा। हमारे यहाँ पर खेती की आमदनी और उत्पादन बढ़ाने की बहुत बड़ी संभावना है, केवल आवश्यकता है कि हम किस तरीके से खेती के अंदर नई तकनीकी का उपयोग करें। आज आपने उन प्रदर्शनियों को देखा होगा और उनमें कई स्टार्टअप को भी देखा होगा।

कल मैं भी वहाँ पर जाऊंगा। हम हर विधान सभा के अंदर इस तरीके के किसान मेले लगाएंगे, जहाँ फर्टिलाइजर और उसके साथ ही अच्छे बीज वाली कंपनियाँ आएंगी। बेहतरीन बीज कौन-सी हो सकती है? नई तकनीकी खेती करने के लिए स्टार्टअप काम कर रहे हैं। हम अपने नौजवानों के लिए भी वहाँ प्रदर्शनी लगाएंगे। उसके साथ-साथ किसानों के लिए जो नए उपकरण हैं, उन उपकरणों का उपयोग करके हम लागत को कम कर सकते हैं। हमारा एक ही प्रयास है कि हमें लागत को कम करना और उत्पादन को बढ़ाना है। इन दो लक्ष्यों पर हमें

काम करना है। इसके लिए सारे इलाके के अंदर जो नई खेती कर रहे हैं, आधुनिक खेती कर रहे हैं, जिन्होंने कम जमीन पर ज्यादा उत्पादन किया है, उन किसानों से अन्य किसानों को भी प्रेरणा मिलें। मुझसे अभी चितौड़ के किसान मिल कर गए हैं। उनके यहाँ जमीन की डेप्थ, जहाँ मिट्टी कम है, पानी भी नहीं है, लेकिन फिर भी उन्होंने उस जमीन का बेहतरीन उपयोग किया है। जो जमीन बची है, उस पर फलदार पौधे लगाएं, कई लोगों ने अमरूद लगाए और बागवानी की है। उन्होंने बताया कि हम एक बीघे में अमरूद के पेड़ों से 50 हजार रुपये से ज्यादा की आमदनी प्राप्त कर लेते हैं।

मैं अभी कुछ दिनों पहले पुणे गया, आंध्र प्रदेश गया और कई राज्यों में भी गया। मेरा भी शौक रहता है कि मेरे इलाके के किसान भी नई-नई तकनीकी और उपकरण से अपनी आमदनी को बढ़ाएं। हम एक-एक विधानसभा में इस तरीके के किसान मेले और प्रदर्शनियाँ लगाएंगे। बीजों की जो बेस्ट कंपनियाँ हैं, सर्वश्रेष्ठ कंपनियों के लोग वहां पर आएं।

जब हम दवाई छिड़कते हैं तो उसमें क्या छिड़कते हैं? हम दुकान पर जाते हैं और दुकानदार से कहते हैं कि यह बीमारी लगी है और वह अपने को दवाई देता है। उसके बाद हम दवाई छिड़क देते हैं। किस पौधे पर कीड़ा लगा है, किस पर नहीं लगा है, हम सारे खेतों पर दवाइयाँ छिड़क देते हैं। आपने देखा होगा कि नई ड्रोन टेक्नोलॉजी के अंदर, पहले वह ड्रोन पूरा सर्वे करता है, उसके बाद वह पेस्टिसाइड दवा वहीं ड्रॉप करता है, जहाँ पर कीड़ा लगा हुआ है। वह पूरी फसल पर पेस्टिसाइड का छिड़काव नहीं करता है। इससे पेस्टिसाइड का कम उपयोग और जो कीड़ा मरना है, वह कीड़ा मर जाए। जो कुछ भी बीमारी आती है, उस बीमारी का हम पहले वैज्ञानिक अध्ययन कराएंगे कि कौन-सी बीमारी है और कौन-सा रिसर्च सेंटर ने नया रिसर्च किया है, ताकि उस बीमारी का इलाज हो सके तथा हमारी फसल बच सकें।

मैंने पूसा सहित अन्य संस्थानों से चर्चा की है। इसी तरीके से फर्टिलाइजर का कम उपयोग हो। इसके लिए हर गाँव का व्यक्ति अपनी मिट्टी की उर्वरता की जांच करें। आप उस जांच को कराइए और उसके आधार पर कौन-कौन सी कमी है, उसमें क्या-क्या डालना चाहिए, उस मिट्टी की उर्वरता की जांच के आधार पर हमें कार्ययोजना बनानी पड़ेगी। फर्टिलाइजर का कम से कम उपयोग हो, प्राकृतिक खेती हो, प्राकृतिक खेती में जितनी फर्टिलाइजर लगती हैं, उतना ही उत्पादन हो।

आज प्रधानमंत्री जी ने आपको नैनो फर्टिलाइजर के बारे में बताया। मैं दुनिया के और अन्य देशों में गया हूँ। जब मैं सुरीनाम में गया तो वहाँ हमसे कहा गया कि हमें नैनो फर्टिलाइजर चाहिए। मैंने कहा कि हमारे भारत के किसान नैनो फर्टिलाइजर का उपयोग नहीं कर रहे हैं, लेकिन सुरीनाम में नैनो फर्टिलाइजर की डिमांड हो रही है। हमें उसका भी अध्ययन करना चाहिए। हमें भी नैनो फर्टिलाइजर का उपयोग करके देखना चाहिए। इसको एक-दो किसान देखेंगे कि उसके क्या परिणाम आते हैं। अगर बेहतर परिणाम आते हैं तो कम लागत और फर्टिलाइजर के कम उपयोग से हमें लाभ मिलेगा।

हमें कुछ-कुछ इलाके के अंदर एक्सपेरिमेंट करते रहना चाहिए। हम छोटे-छोटे इलाके के अंदर, एक बीघे के अंदर एक नया बीज लगाएं और दूसरे में पुराना बीज लगाए। फिर, उसकी आमदनी देखें कि इस नए बीज का क्या परिणाम निकलता है। क्योंकि, हमारे किसान जब तक नहीं मानेंगे, तब तक वे उसका प्रैक्टिकल उपयोग नहीं करेंगे। हमारे यहाँ परंपरागत खेती करने की आदत है। उस परंपरागत खेती के अंदर भी हम बेहतरीन बीज का उपयोग करें, कम फर्टिलाइजर का उपयोग करें, कीटनाशक दवाइयों का कम उपयोग करें और उत्पादन बढ़ाएं। इसके लिए आप यहाँ पर आए हैं। मैं कोशिश करूँगा कि हर गाँव में ऐसे पाँच-दस किसान पहले इन सारे नए उपकरणों का उपयोग करें, नई तकनीकी का उपयोग करें, फिर जब पाँच-दस लोग अपनी खेत में इसका एक्सपेरिमेंट करेंगे और उनके अच्छे परिणाम अच्छे आएंगे तो दूसरे गाँव के लोग भी करेंगे। ये दो काम हमें करने हैं।

मुझे आशा है और आपने मुझे चुनकर भेजा है, मेरी जिम्मेदारी है कि मैं अपने इलाके के किसानों की उत्पादन बढ़ा सकूँ, उनकी आय को बढ़ा सकूँ, ताकि कृषि के माध्यम से एक आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन आ सके। गाँव के पढ़े-लिखे नौजवानों को कम से कम हर गाँव के अंदर जब कभी आपदा-संकट आए तो उन्हें फसल बीमा योजना की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

फसल बीमा योजना की जानकारी न होने के कारण कई बार फसल खराब हो जाती है, बीमा होने के बाद भी उसे बीमा का लाभ नहीं मिलता। मैंने पिछली बार फसल बीमा के लिए यहां सभी अधिकारियों को बुलाकर बात की और मैंने कहा कि जिस खेत का बीमा हो रहा है, वहां पर सर्वे करने वाला व्यक्ति जा रहा है, उसे एक कॉपी दे कि मैंने आपका इतना नुकसान पाया है, ताकि उसे अगर फसल बीमा का लाभ न मिले तो वह क्लेम कर सके, अपील कर सके। अभी तक वह साइन करा लेता था और फसल बीमा का लाभ उसे नहीं मिलता था। कई फसल

बीमा वाले मिलीभगत करते थे। अगर गांव में पांच-दस लोग भी फसल बीमा की जानकारी में एक्सपर्ट हो जाएं ताकि जैसे ही कोई आपदा आए, जिनको फसल बीमा का क्लेम मिलना है, 100 परसेंट क्लेम मिले। इसी तरीके से जब आपदा आ जाती है, तो कई लोगों को आपदा की राशि नहीं मिलती है, उसका कारण है कि पटवानी उनका सर्वे नहीं कर पाता है। इसी तरीके से पांच-दस लोग, इस विषय पर आपदा आते ही सबका सर्वे कराएं, सबका लिखकर दे कि इतना नुकसान हुआ है, फोटो खींच कर रखें ताकि कभी भी क्लेम कर सकें। ऐसे ही हमें कुछ गांवों में पांच-दस नौजवानों को इस तरीके से तैयार करना पड़ेगा। हम और चीजों में भी तैयार करेंगे।

हम चिकित्सा में मोबाइल वैन पहुंचा रहे हैं, मेडिकल कैम्प लगा रहे हैं। जब गांव में मोबाइल वैन घूमी तो मैं दंग रह गया, कोटा में 20-22 परसेंट लोगों की आंखों में कुछ न कुछ खराबी थी। उनको ऑपरेशन की जरूरत थी या चश्मे की जरूरत थी। ऐसे ही कई गंभीर बीमारियां हो जाती हैं क्योंकि व्यक्ति को बीमारी की जानकारी नहीं होती है। गंभीर बीमारी की जानकारी प्राप्त हो जाए और जानकारी के बाद उसका इलाज जहां भी हो सके, कोटा में, जयपुर में, दिल्ली में, हम सब मिलकर इलाज कराएं ताकि हर व्यक्ति स्वस्थ रहे। हमारा एग्रीकल्चरल प्रोडक्शन अच्छा हो, हम सब स्वस्थ रहें, हमारे बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, इसके लिए विद्यालयों को अच्छा बनाएं, वहां पर अच्छा शिक्षण हो। कोचिंग के रूप में कोटा में मैंने कई संस्थानों से बात की है। सैटेलाइट से हर क्लास में एक-एक गांव के अंदर स्मार्ट क्लास बनाएंगे, ताकि उनको सैटेलाइट क्लास पढ़ा सकें। ऐसे हम सबको मिलकर काम करना है।

हम सब अगर सामूहिकता के साथ काम करेंगे और गांवों के विकास के लिए काम करेंगे तो बेहतर परिणाम दे सकते हैं। मेरी जिम्मेदारी ज्यादा बन जाती है क्योंकि आपने मुझे लोकसभा का सदस्य बनाया है। माननीय प्रधान मंत्री जी और सभी सांसदों ने मुझे स्पीकर का दायित्व दिया है। इस नाते मेरी ज्यादा जिम्मेदारी बन जाती है और इस जिम्मेदारी का मैं ठीक से निर्वहन करूं, इसके लिए एक सचेत मतदाता और नागरिक के रूप में समय-समय पर आपकी जानकारी में जो विषय आए, उससे मुझे अवगत कराते रहें। हम आपस में जुड़े रहें और अपने-अपने क्षेत्र के अंदर सर्वश्रेष्ठ काम हमें करना है। हर गांव को हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए हम सबको मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

आप सबने संसद भवन देखा। इस संसद भवन में 75 साल की लोकतंत्र की यात्रा के अंदर देश के अंदर सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन हुए। आपने केंद्रीय कक्ष भी देखा, जहां हमारा संविधान बना। यहां पर माननीय प्रधान मंत्री जी और सांसदगण बैठते हैं। यहां चर्चा और संवाद होता है। किसानों के बारे में भी चर्चा और संवाद होता है। चर्चा और संवाद मे किसानों की जमीन की जानकारी सभी सांसदों को मिले, इसके लिए अगर सभी किसान अपने क्षेत्र के सांसदों को समय-समय पर जमीन की जानकारी देते रहेंगे, तो वे अच्छी बहस कर पाएंगे, अच्छी चर्चा कर पाएंगे और एक बेहतर परिणाम ला पाएंगे।

आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको वापस कोटा भी जाना है। आप लंबी यात्रा करके आए हैं। अगली बार हम सब मिलकर एक विधान सभा एक तहसील में, आपने स्टार्टअप देखे, मैं आग्रह करूंगा कि अपनी विधान सभा में और भी किसान आ सकें और इन स्टार्टअप में नौजवानों ने जो काम किया है, देश में बहुत बड़ा परिवर्तन कृषि क्षेत्र में आएगा और हम इसका उपयोग करेंगे। आपका बहुत -बहुत धन्यवाद।

.....